International Journal of Applied Research 2015; 1(13): 671-673

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2015; 1(13): 671-673
www.allresearchjournal.com
Received: 25-10-2015
Accepted: 26-11-2015

डॉ. शिवदत्त शमा
पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग
राजकीय महाविद्यालय ढलियारा
कांगडा हिप्र

Correspondence
डॉ. शिवदत्त शमा
पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग
राजकीय महाविद्यालय ढलियारा
कांगडा हिप्र

संत रविदास और मीराबाई

डॉ. शिवदत्त शर्मा

भारतीय दर्शन सम्पूर्ण विश्व के लिए प्रेरणा का स्त्रोत रहा है। समय समय पर अनेक सन्त महात्माओं ने आध्यात्मिक क्षेत्र में अमूल्य योग दान दिया है। मध्यकाल में सन्त रविदास की शिष्या के रूप में अनेक धारणाएं प्रचलित हैं। कुछ आलोचक उन्हें सन्त रविदास की शिष्या मानते हैं तथा अन्य इस से सहमत नहीं हैं।संत समाज में मीराबाई एक विशिष्ट स्थान रखती है। 'संतन ढ़िग बैठ–बैठकर लोक लाज खोई' कहने वाली मीरा अपने युग की निष्कपट प्रेम–योगिनी, भावात्मक सुकुमार काव्य की जनक, स्वतंत्र व्यक्तित्व की स्वामिनी तथा महान् कवयित्री थी।
अधुनातन अन्वेषणों से यह तथ्य प्रायः निश्चित ही है कि मीरा गुरू रविदास की शिष्या थी, परन्तु संत साहित्य के कुछ उद्भट विद्वान इस तथ्य के विषय में शंका करते हैं।

''यह संभव नहीं कि मीरा रविदास की शिष्या थी।''[1]

डॉ0 कृष्णलाल के अनुसार–''रैदास सम्प्रदाय वालों ने मीरा के नाम से कितने ही पद लिखकर उन्हे रैदास की शिष्या प्रमाणित करने का प्रयत्न किया है। संत रैदास को गुरू प्रमाणित करने वाले पद संख्या से अधिक है, परन्तु स्थान और काल के विचार से रैदास और मीरा का सम्पर्क संभव नहीं था।''[2] परन्तु आगे चलकर वे स्वयं ही रानी झाली को रैदास की शिष्या प्रमाणित करते हैं तथा यह भी मानते हैं कि रैदास के शिष्यों में झाली के रविदास जी के पास आने के कारण मीरा पर रैदास का प्रभाव पड़ा''[3]
इसी संबंध में प्रो0 देशराज भाटी मीरावाई के पदों में गुरू रविदास जी का गुरू रूप में किया गया उल्लेख प्रामाणिक मानकर भी पूर्वाग्रह से काम लेते हुए कहते हैं–
''रैदास जी से सीधा उपदेश न लेकर मीरा ने अन्य किसी रैदासी संत शायद (बीठल दास) से दीक्षा ली होगी।''4
रैदास का समय 1433–1584 वि0 स्वीकृत है। इसी संबंध में जानकीदास श्री वैष्णव लिखते हैं– मीराबाई ने 'श्री रामनाम और श्री राम–रूप का भी प्रचुर यश वर्णन किया है, परन्तु उनकी उपासना श्री गिरिधर नागर भगवान श्रीकृष्ण की ही थी। इस बात को लेकर उनके बिषय में लिखने वाले अनेकानेक लेखक भ्रम में पड़ गये हैं और किसी ने उनको श्री वल्लभ सम्प्रदाय के प्रसिद्ध कवि सूरदास की शिष्या कहा तो किसी ने श्री गोरांग महाप्रभु की शिष्या, परन्तु मीरा ने अनेकानेक संतों का गुणगान करते हुए भी अन्य किसी को अपना गुरू किसी पद में नहीं कहा है, जबकि रैदास जी को अनेक पदों में अपना गुरू स्वीकार किया है।
अतः इस पुष्ट प्रमाण के होने पर भी जो लोग किसी प्रकार के पूर्वाग्रह या भ्रमवश उनको श्री रामानंद सम्प्रदायानुयायिनी मानने में शंका करते हैं तो यह आश्चर्य की ही बात है।''[5]
''डॉ0 वी0 पी शर्मा ने तो अकाट्य प्रमाणों द्वारा यह पुष्ट किया है कि मीरा निश्चित रूप से संत रविदास की शिष्या ही थी। वास्तव में मीरा ने छोटी आयु में ही लगभग 18 वर्ष की आयु में गुरू जी का शिष्यत्व ग्रहण किया था।''[6]
मीरा जी ने कई पदों में संत रविदास जी को अपना गुरू बताया है–

''रैदास संत मिले सतगुरू, दीन्हा सुरत सहदानी।''[7]

संत रविदास जी भी मूलतः प्रेमा भक्ति के उपासक हैं उन्होने अनेक पद इस तरह गाए हैं जिनमें प्रेमा भक्ति के प्रमाण मिल जाते हैं। उसी प्रेमा भक्ति के बिना तो वे उदास है–
''अनेक जतन निग्रह कीऐ, टारी न टरै भ्रमफांस,

''अनेक जतन निग्रह कीऐ, टारी न टरै भ्रमफांस,
प्रेम भगति नहीं उपजै, ता ते रविदास उदास।''[8]
वे प्रेम भक्ति के द्वारा अपने हृदय की पीड़ा दूर करना चाहते हैं।
''रविदास मेरे मन लागियो, राम प्रेम को तीर।
राम रसायन जऊ मिलहिं, तऊ हरै हमरो पीर।।''[9]

मीरा और संत रविदास के रहस्यमय प्रेम प्रकाशन में भी पूर्ण साम्य देखने को मिलता है।

''भोर भई मोहि इक टग जोवतु तलपत रजनी जाई।
पीव बिन सेजहिं का सुख सोऊं, विरह बिथा तन पाई।।''[10]

मीरा और सन्त रविदास की विचारधारा में भी पर्याप्त साम्य दिखाई देता है।दोनों केपदों में न केवल शाब्दिक मेल है अपितु भाव साम्य देख कर इस बात से इनकार करना कठिन है कि दोनों में गुरु–शिष्य सम्बन्ध रहे होंगे।मीरा और सन्त रविदास के पदों की समानता का एक उदाहरण देखिए–

मीरा का पद

''या सेजिया बहुरंग बहु पूल विछाये हो।
पंथ हो जोहुँ स्याम का, आजहुँ मॉहि जाये हों।।
मीरा व्याकुल विरिहिणी, अपनों कर दीजै हो।।[11]

मीरा तथा रविदास में भावासाम्य के साथ–साथ पदावली में भी साम्य हैः–

रविदास

''अब कैसे छूटै राम रट लागी।
प्रभु जी तुम चंदन हम पानी, जाकी बास अंग–अंग समानी।
प्रभु जी तुम दीपक हम बाती, जाकी जौति जरै दिन–राती।
प्रभु जी तुम मोती हम धागा, जैसे सोनहिं मिलत सोहागा।
प्रभु जी तुम स्वामी हम दासा, ऐसी भगति करै 'रविदासा'।[12]

मीराबाई

''जो तुम तोड़ो पीआ, मैं नहीं तोडूं।
तेरी प्रीत तोड़ी, कृष्ण कौन संग जोडूं।
तुम भये तरूवर, मैं भई पंखिआं।
तुम भये सरवर, मैं भई मधिआ।
तुम भये गिरवर, मैं भई चोरा।
तुम भये चंदा, चदां, मैं भई चकोरा।
तुम भये मोती प्रभु जी, हम भय धागा।
तुम भये सोणा, हम भये सुहागा।
बाई मीरा के प्रभु ब्रज के बासी।
तुम मेरे ठाकुर, मैं तेरी दासी।।[13]

मीरा वाणी में संत–वाणी की तरह नाम–जप भजन बंदगी पर अत्यधिक बल दिया गया है। वे बार–बार चेतावनी देती है कि यह मानस जन्म दुर्लभ है। अतः प्राणी को चाहिए कि वह प्रभु नाम कीआराधना करे वही उसे इस भवसागर से पार लगा सकता है।

''मेरी बेडो लगा ज्यों पार, प्रभु जी मैं अरज करूंछू।
या भव में बहु दुःख पायो, संसा सोग निवार।
अष्ट करम की तलब लगी है, दूर करो दुःख भार।
यो संसार सब बह्यो जात है, लख चौरासी री धार।
मीरा के प्रभु गिरकर नागर, आवागमन निवार।[14]

संत रविदास जी ने भी मानव जीवन को अमूल्य बताकर उसकी उपयोगिता का संकेत किया हैः–

''त्रिगद जोनि अचेत संभव, पुनि पुन्न पाप असोच।
मानुषा अवतार दुल्लभ, तिहि संकट पोच।।
भगत जन भै–रिन, परमानन्द करहु ध्यान।[15]

कर्म सिद्धांत भारतीय जीवन–दर्शन का एक मौलिक सिद्धांत है। पूर्वजन्म के शुभ–अशुभ कर्मो के अनुरूप ही जीवन निर्णय होता है। मीरा ने इस ओर स्पष्ट संकेत किया है–

''नाहिं ऐसो जन्म बारम्बार
का जानो कुछ पुण्य प्रगटे, मानुष अवतार।
बढ़त छिन–छिन घटत पल पलु, जातन लागे बार।
बिरछ कै ज्यूं पात टूटे, बहुरि न लागे डार।
भौ सागर अति जोर कहिए, अनंत उडी बार।
राम नाम का बॉध बड़ो, उतर परले पार।[16]

संत रविदास जी ने भी पूर्व जन्म के पुण्यों का फल मनुष्य योनि को माना है–

''दुर्लभ जनम पुन फल पाइउ, बिरथा जात अविवेक।
राजे इन्दु सम सररि ग्रहि, आसन बिनु हरि भगति करछु किह लेखे।।[17]

''अतः मनुष्य का कोई पक्ष नहीं जिस पर मीरा तथा रविदास द्वारा गहन दृष्टिपात न किया गया हो। क्योंकि मीरा एक जिज्ञासु और ज्ञानी भक्त के रूप में गिनी जाती है जिसने लोकलाज, वर्ण अभिमान, ऊॅच–नीच की भावना और कुल मर्यादा का त्याग करके, केवल परमार्थ–साधना और जीव मुक्ति की जिज्ञासा द्वारा संत शिरोमणि श्री रविदास जी महाराज का शिष्यत्व ग्रहण किया, जिन गुरू रविदास जी ने अज्ञानी हृदय में ब्रह्म ज्ञान का स्त्रोत प्रवाहित कर दिया।''[19]

यहां यह कहना अन्यथा न होगा कि प्रायः सभी संतो की वाणियों मे कुछ पद यहां तक की कई साखियॉ या उनके टुकड़े, एक–दूसरे से मिल जाते हैं। अतः यह संभव है कि कबीर, दादु आदि के पदों में संत रविदास जी के पदों का सम्मिलन हो गया हो। इसी प्रकार परवर्ती तुलसी एवं मीरा को भी इनसे प्रभावित हुआ कहा जा सकता है। डॉ0 धर्मपाल मैनी जी इस ओर संकेत करते हुए कहते हैं– ''इस तरह रविदास जी ने पूर्व दर्शनों के ज्ञान को पकाकर परवर्ती दार्शनिकों महात्माओं में होम कर दिया। यह दर्शन सलिलवत धीरे–धीरे भारतीय समाज को आध्यात्मिक दर्शन का सरल उपदेश देता हुआ आगे बढ़ा।''[20]

अतः निष्कर्ष यह निकलता है कि गुरू रविदास जी के परवर्ती संत पूर्व–स्थापित मूल्यों की रक्षार्थ सर्वदा तत्पर रहे। अपने विचारों की अभिव्यक्ति में सरलता, जाति–पाति, बाह्य आडम्बर
तथा रूढ़ियों के विरूद्ध उन्होने विद्रोहात्मक रूख अपनाये रखा। इसी से तो वे भारतीय संस्कृति को एक सूत्र मे बॉधने में सफल रहे।

निष्कर्ष

उपर्युक्त सम्पूर्ण विवेचन का सार यह है कि गुरू रविदास जी परवर्ती संतों की वाणी तथा उनके उपदेशों ने तत्कालीन समाज के जीवन में चतुर्दिक परिवर्तन कर दिया। कोरी, चमार, जुलाहा, किसानों व अछूतों के लिए इसी प्रकार के लोक–धर्मो तथा संस्कारों की आवश्यकता थी। अशिक्षित जन–समाज के लिए नाम–जप, सत्य–पालन, उदारता एवं सहिष्णुता के आदर्श, सामाजिक एवं धार्मिक जीवन के लिए समान रूप से उपयोगी तथा लाभप्रद सिद्ध हुए।

सन्दर्भ सूचि

1 आचार्य परशुराम चतुर्वेदी, उत्तरी भारत की संत परप्परा, पृ0 270
2 डॉ0 कृष्णपाल, मीराबाई पृ0 93–94
3 डॉ0 कृष्णपाल, मीराबाई पृ0 95
4 प्रो0 देशराज भाटी, मीराबाई और पदावली पृ0 31
5 भक्तमाल, ठाकुरदास एण्ड सन्ज, वाराणसी पृ0 457–58
6 संत गुरू रविदास वाणी, पृ0 59–60
7 मीरा की शब्दावली, वैलवेडियर प्रैस पृ0 17
8 आदि ग्रंथ – पृ0 349
9 पं0 यू0–साखी 14
10 वाणी – पद–98
11 श्री लीलाधर वियोगी, काब्य–कोकिलाः मीराबाई, पृ0 75
12 रवि0 वाणी–पद–66
13 मीरा पदावली–'पंजाबी भाषा विभाग',पंजाव अध्याय पांच पद 3 पृ0
14 प्रो0 देशराज भाटी, मीराबाई और उनकी पदावली, पद–116 पृ0
15 वाणी पद – 48
16 डॉ0 भूवनेश्वर माधव, 'मीरा की प्रेम साधना' पृ0 –47
17 आदि ग्रंथ – पृ0 958
18 डॉ0 भुवनेश्वर माधव, 'मीरा की प्रेम साधना' पृ0 47
19 संत श्री जगवीर सिंह, संत रविदास महात्म्य पृ0 15
20 डॉ धर्म पाल मैणी सन्तों के धार्मिक विश्वास पृ 31